इतिहास का अर्थ, प्रकृति तथा क्षेत्र

इतिहास अपने व्यापक अर्थ मे प्रत्येक वस्तु या घटना
है जो कभी घटित हुई परन्तु अतित को प्रत्यक्ष
रूप से नही देखा जा सकता है। इसके विषय मे
जो कुछ जाना जा सकता है वह उन शेष चिन्हो से
ज्ञात हो सकता है जो उस समय की परिस्थितियो
मनुष्यो आदि ने किसी न किसी रूप मे छोड़े है।
अतः अतीत के तथ्यो के शेष चिन्ह ही इतिहास का
निर्माण करते है।

इतिहास का अंग्रेजी रूपान्तरण HIS•TORY
है जो ग्रीक शब्द HISTORIA से बना है, जिसका अर्थ
है - जानना या ज्ञात करना। इस शब्द का आरम्भ
करने का श्रेय युनानी इतिहासकार हेरोडोटस को प्राप्त है
वह पहला व्यक्ति था जिसने घटनाओ को कथा के रूप
मे लिखा और इसीलिए कथात्मक इतिहास का जनक
माना जाता है।

HISTORIA नामक युनानी शब्द ही कालान्तर मे
लैटिन शब्द HISTORIA मे व्यवहृत होने लगा और तदुपरान्त
अंग्रेजी मे HISTORIA के नाम से प्रयुक्त होने लगा।
थ्यूसिडाइडस (454 B.C.–399 B.C.) ने इतिहास को भिन्न
रूप मे प्रस्तुत किया
वह पहला व्यक्ति था जिसने इतिहास मे विश्वसनीयता लाने
पर बल दिया। उसने ऐसी इतिहास लिखने के लिए
भिन्न पद्धति अपनायी वह थी भूतकाल का इतिहास न
लिखकर वर्तमान का इतिहास लिखा। थ्यूसिडाइडस ने
इतिहास को शिक्षात्मक रूप मे प्रस्तुत किया। लगभग
2200 वर्षो तक इतिहास लिखने की यही परिपाटी
चलती रही।
इतिहास को कहानी तथा शिक्षात्मक विधि के प्रस्तुतीकरण
से निकालकर वैज्ञानिक आधार पर संजोने का श्रेय
जर्मन लेखको को प्राप्त है।
इनमे रेंक नियूर आदि जर्मन लेखक प्रसिद्ध है। रेंक ने
अपनी पुस्तक की प्राक्कथन मे स्पष्ट रूप मे लिखा है
कि " उसकी उद्देश्य भूत का मूल्यांकन करना या

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

शिक्षात्मक दृग से सामग्री को या घटनाओं को प्रस्तुत करना नहीं है, बल्कि वह प्रदर्शित करना है जो घटित हो चुका है।

19 वीं शताब्दी को इतिहास की शताब्दी के नाम से जाना जाता है। इस शताब्दी में दो बातें नजर आती हैं -

(अ) अतीत में कुछ बातें अतीत के लिए महत्वपूर्ण थीं

(ब) उन अतीत की बातों का हमारे लिए क्या महत्व है? परन्तु २० वीं शताब्दी के प्रारम्भ में ऐक इस वस्तुनिष्ठता को चुनौती दी गई और यह आग्रह किया जाने लगा कि अतीत के तथ्यों का संकलन आज की रुचियों तथा समस्याओं के आधार पर किया जाना चाहिए।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

इतिहास × अर्थ × स्वरूप × परिभाषा

इतिहास × का × शाब्दिक × अर्थ :– HISTORY शब्द की उत्पत्ति लैटिन तथा ग्रीक शब्द HISTORIA से मानी जाती है, जिसका अर्थ है – जानना (knowing) भारतीय परम्परा के अनुसार इतिहास का अर्थ है "ऐसा ही हुआ।

इतिहास की परिभाषा :– इतिहास की परिभाषाएँ भिन्न-भिन्न विद्वानों ने भिन्न-भिन्न दी है, जो अधोलिखित है।

हेनरी जॉनसन के अनुसार :– इतिहास विस्तृत रूप मे प्रत्येक घटना है जो कि कभी घटीत हुई।

डा० राधाकृष्णन ने इतिहास को राष्ट्र की स्मरण शक्ति कहा है।

एक विद्वान ने इतिहास को "नववहार कलैण्डर कहा है"

रेपसन महोदय के अनुसार :– इतिहास घटनाओं या विचारों की उन्नति का सुसम्बद्ध विवरण है।

जॉन हाजिंग के अनुसार :– इतिहास वह बौद्धिक स्वरूप है जिसमे सभ्यता अपने अतीत के अनुसार चित्रित करती है।

मेटलेण्ड के अनुसार :– मानव ने जो कुछ किया और कहा है, यहाँ तक की जो कुछ सोचा है वह इतिहास है।

उक्त परिभाषाओं से स्पष्ट हो जाता है इतिहास मानव-जीवन के विकास की कहानी है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

इतिहास का स्वरूप :-

इतिहास का स्वरूप क्या है ?
इतिहास विज्ञान है या कला ? इतिहास से सम्बन्धित इन समस्याओं पर पर्याप्त समय से वाद - विवाद चला आ रहा है। कुछ विद्वान इतिहास को केवल विज्ञान बताते है तो कुछ इसे कला बताते है, इसके स्वरूप के सम्बन्ध मे प्रचलित धारणाओं को देखने से पूर्व विज्ञान क्या है ? यह देखना आवश्यक है।

विज्ञान नियमित ज्ञान है जो प्रयोगात्मक तथा निरिक्षणात्मक ढग से प्राप्त किया जाता है। दूसरे शब्दो मे हम कह सकते है कि " प्रकृति के किसी विभाग के कार्य-करण सम्बन्ध मे ज्ञान के क्रमबद्ध संग्रह को विज्ञान कहते है।
इस प्रकार विज्ञान ज्ञान का भण्डार है जिसमे निरीक्षण, परिक्षण एव प्रयोगो द्वारा प्रकृति की समानता एव असमानता का अध्ययन किया जाता है। परन्तु इसके लिए जानकारी प्राप्त करना ही आवश्यक नही है, वरन उसे क्रमबद्ध भी होना अत्यन्त आवश्यक है।

इतिहास की वैज्ञानिकता पर सवाल ~~खड़े~~ खड़े करने वाले विद्वानो ने इसके विपक्ष मे निम्नलिखित तर्क देते है।

① इतिहास किसी निश्चित सिद्धान्त अथवा आदर्शो पर आधारित नही है। इसके द्वारा हम किसी निष्कर्ष पर नही पहुँच सकते। इसके द्वारा किसी निश्चित सिद्धान्त की स्थापना नही हो सकती है। तो उसे विज्ञान की संज्ञा किस प्रकार प्रदान की जा सकती है।

② इतिहास की वैज्ञानिकता के विरुद्ध सबसे बड़ा तर्क यह है कि इतिहास एक ऐसा विषय है जो मनुष्य इच्छा तथा कार्यो का विवेचन करता है, क्योकि मनुष्य की इच्छाओ पर किसी प्रकार का अकुश नही लगाया जा सकता है तथा वह अपने विचारो के लिए पूर्ण स्वतन्त्र है अत: ऐसी स्थिति मे उसके द्वारा किसी निश्चित नियम का निर्धारण नही हो पाता।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

2020-8-18 12:3

इतिहास एक विज्ञान है :- जो विद्वान इनकी वैज्ञानिकता
की पुष्टि करते है उनका मत है कि इतिहास की
वैज्ञानिकता के विरुद्ध जो विचारधारायें हमे प्राप्त है,
उन्हे हम व्यर्थ अथवा निराधार नही कह सकते है।
यह पूर्णतया सत्य है, कि इतिहास भौतिक विज्ञान की
भाँति, एक शुद्ध विज्ञान नही है और न इसमे प्रयोग
किए जा सकते है। परन्तु इतिहास अनेक घटनाओं का
विवरण है जो किस प्रकार, कब क्यो तथा कहाँ घटित
हुई उन सबका वैज्ञानिक दृष्टिकोण से निष्पक्ष विवेचन
करता है। इस कारण हम इसे विज्ञान कहते है, क्योंकि
ज्ञान का आधार तथ्यो पर आश्रित है, वह एक प्रकार
का विज्ञान है।

इतिहास वह विषय है जो मानव तथा मानव
जीवन से सम्बन्ध रखने वाली बातो तथा उसके कार्यों से
सम्बन्ध रखता है। उसकी प्रयोगशाला समस्त विश्व है।
भौतिक विज्ञान की प्रयोगशाला मे समस्त वस्तुएं मानव के
अधिकार मे रहती है, लेकिन इतिहास की सामग्री भिन्न
है वह तो अस्थि - चर्म- रुधिर - पिण्डम मानव के बहुविधि
कार्यों से उपलब्ध होती है। यह संकीर्ण अर्थ मे विज्ञान
की कसौटी पर खरा नही उतरता, बलकि उदार अर्थ मे
यह भी समस्त सामाजिक विज्ञानो की भाँति एक विज्ञान है।
उक्त विवेचना से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि
" इतिहास विज्ञान के उदार सिद्धान्तो के अनुसार कसौटी
पर खरा उतरता है। इतिहास एक वैज्ञानिक विषय
है इसमे किसी प्रकार के सन्देह के लिए स्थान नही है

इतिहास एक कला → विद्वानो का एक वर्ग इतिहास को
कला मानता है, जब कि इतिहास
विज्ञान है तो कला नही हो सकता है। यदि कला
है तो विज्ञान नही हो सकता। इन विद्वानो का मत है
कि विज्ञान तो सत्य तथ्यो का अस्थि पंजर ही प्रदान
करता है। परन्तु कवि की कल्पना इस अस्थि - खण्डो को
मांस देकर जीवन प्रदान करती है। कवि की
कल्पना से ये सत्य तथ्य सजीव हो उठते है। दूसरे
... हम कह सकते है कि अनुसंधान के पश्चात

2020-8-

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

उसको सुन्दर तथा सरल भाषा में व्यक्त करना कला का कार्य है, घटना सम्बन्धी बातों का संकलन विज्ञान है और उसकी रचना व वर्णन कला है। ये दोनों ही इतिहास के अंग हैं।

इतिहास का क्षेत्र :-

गार्डनर के अनुसार इतिहास के दो अर्थ लिए जा सकते हैं - या तो इसका आशय हो सकता है - घटनाओं का लेखा या स्वयं घटनायें। अतीत के गर्भ में अनन्त घटनायें समाहित हो चुकी हैं, प्रत्येक घटना इतिहास नहीं है। यदि उनको वैज्ञानिक रूप में क्रमबद्ध करके संयोजित किया जाये तो वे इतिहास की सामग्री अवश्य हैं। प्राय: यह कहा जाता है कि पृथ्वी पर जो भी घटित हुआ, वह इतिहास है, ऐसा कहने और स्वीकार करने का आशय यह होगा कि हम इतिहास के कलेवर को बढ़ाते चले जायें। इस दृष्टि से पृथ्वी की कहानी भी इतिहास का अंग बन जायेगी। परन्तु इतिहास के क्षेत्र में केवल मानव के विकास की कहानी ही शामिल करना चाहिए।

इतिहास घटनाओं की शृंखला है और ये घटनायें काल के दीर्घ प्रवाह में किसी एक निश्चित बिन्दु या समय पर घटित होती हैं। इस प्रकार काल इतिहास में क्रमबद्धता प्रस्तुत करता है। यदि काल एक क्षण के लिए स्थिर हो जाये तो इतिहास भी समाप्त हो जायेगा। अत: काल वर्तमान इतिहास का प्रमुख तत्व है और परिवर्तन में क्रमबद्धता भी प्रस्तुत करता है। इतिहास मानव के क्रमबद्ध विकास की कहानी है। जिसमें काल के विभिन्न सोपान उसके विकास की विभिन्न स्थितियों को प्रस्तुत करते हैं।

भारत में इतिहास का विकास विभिन्न प्रकार की मौखिक सामग्री से हुआ है। इस मौखिक सामग्री में मौखिक परम्परायें, गाथा, आख्यान, पुराण इतिवृत्त आते हैं राजाओं, सम्राटों एवं महापुरुषों का प्रशस्ती-गान सूत लोग करते थे, और वे ही ऐतिहासिक परम्पराओं को भावी सन्तति को सौंपते चले जाते थे।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

इतिहास के स्वरूप को निम्न पंक्तियों में प्रस्तुत कर सकते हैं।

1. इतिहास अतीत की घटनाओं का लेखा-जोखा है।
2. इतिहास मानव के विकास की क्रमबद्ध कहानी है।
3. इतिहास का क्षेत्र जीवन गाथाओं से सम्बन्धित है।
4. इतिहास में मौखिक परम्पराएं गाथा आदि शामिल है।
5. इतिहास का क्षेत्र व्यापक है :- युग विशेष के संदर्भ में।

निम्न चार्ट से इतिहास का क्षेत्र और स्पष्ट हो जाता है

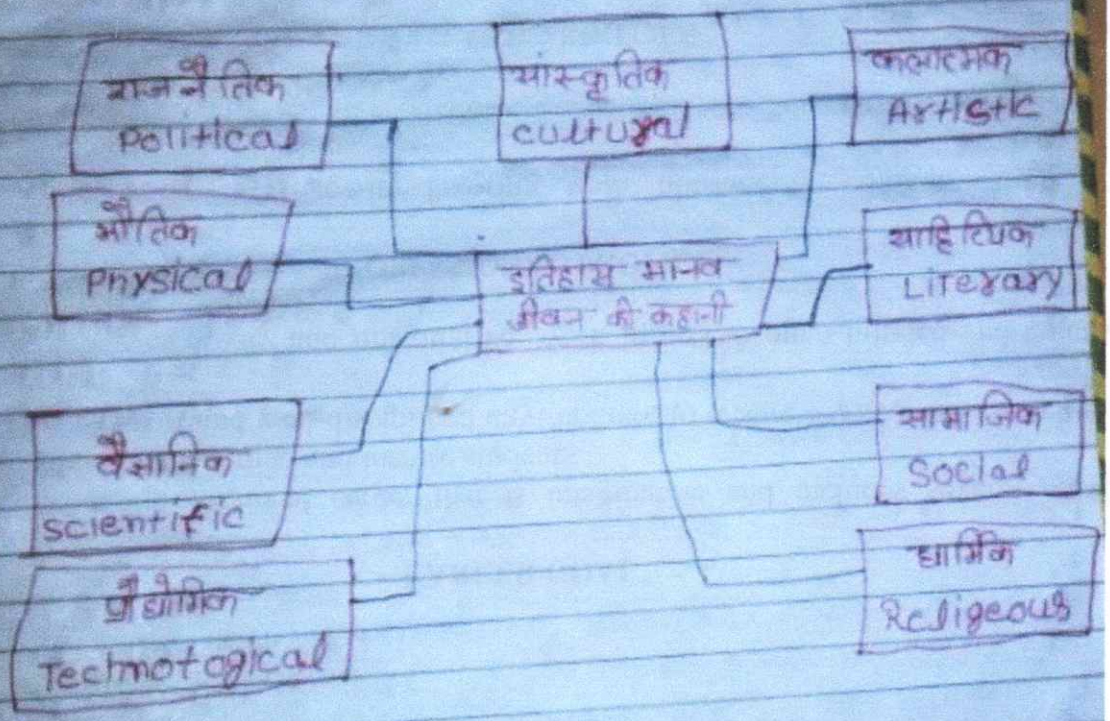

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया